

साहित्य

ISSN 2349-1906

वर्ग 8 संयुक्तांक अंक 32-33 अक्टूबर-मार्च 2023

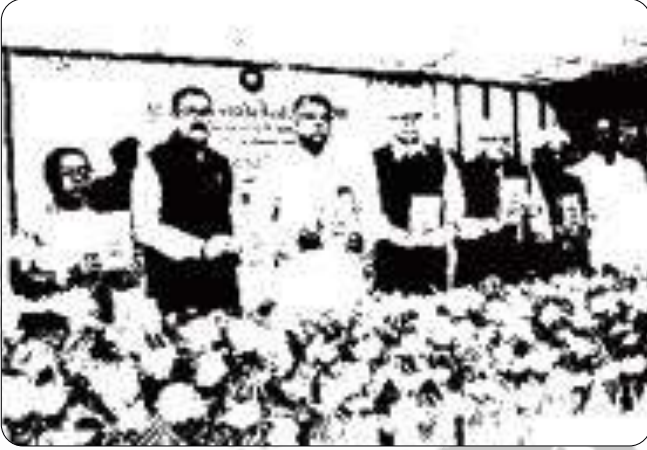
यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा की साक्षी

विद्वत् परिषद द्वारा समीक्षित पत्रिका

संपादक

प्रो. कलानाथ मिश्र



अनुग्रह नारायण महाविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉक्टर कलानाथ मिश्र की आलोचनात्मक पुस्तक 'सृजन के प्रतिमान' का लोकार्पण करते हुए बाएं उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान की प्रधान संपादक डॉ अमिता दुबे, अनुग्रह नारायण महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. एस. पी. शाही, बिहार विधानसभा के अध्यक्ष श्री अवध बिहारी चौधरी, पुस्तक के लेखक, साहित्य-यात्रा के संपादक डॉक्टर कलानाथ मिश्र, वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित, व्यंग्य-यात्रा के संपादक डॉ. प्रेम जनमेजय और हिंदी के विद्वान प्राध्यापक डॉ. संजय कुमार सिंह।

अनुग्रह नारायण महाविद्यालय पटना में आयोजित भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी साहित्य की भूमिका विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में उपस्थित विद्वतजन



अनुग्रह नारायण महाविद्यालय पटना में आयोजित 'भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी साहित्य की भूमिका' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में व्याख्यान देते हुए वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित, मंचासीन हैं, (बाएं से) साहित्य यात्रा के संपादक डॉक्टर कलानाथ मिश्र, केंद्रीय हिंदी संस्थान लखनऊ की प्रधान संपादक डॉ. अमिता दुबे, अनुग्रह नारायण महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. एस.पी. शाही एवं बिहार विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. अवध बिहारी चौधरी।

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

विद्वत् परिषद द्वारा समीक्षित पत्रिका

संपादक

प्रो० कलानाथ मिश्र

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

सदस्यता फार्म

‘साहित्य यात्रा’ विशिष्ट सदस्यता	:	1100/-
एक वर्ष (4 अंक)	:	500/- (डाक खर्च सहित)
तीन वर्ष (12 अंक)	:	1500/- (डाक खर्च सहित)
संस्थागत मूल्य (3 वर्ष)	:	1500/-
आजीवन सदस्यता	:	15000/-
विदेश के लिए (3 अंक)	:	60 डॉलर

(पटना के बाहर के चेक पर कृपया बैंक कमीशन के 40/- रुपये अतिरिक्त जोड़ दें।)

उक्त दर के अनुरूप मैं चेक / ड्राफ्ट संलग्न कर रहा हूँ। ऑन लाईन खाते में डाल दिया हूँ (रेफरेन्स नं.) कृपया मुझे ग्राहक बना कर मेरी प्रति निम्न पते पर भिजवाएँ।

नाम :-	पद :-
पता :-	
दूरभाष 1 :	दूरभाष 2 :
शहर :	पिन नं. :-
देश :	ईमेल -
संकाय / विभाग / विद्यालय :	

भुगतान की जानकारी

नकद/बैंक रकम : रु. द्वारा

डी0डी0/प्रत्यक्ष हस्तांतरण/चेक/बैंक का नाम :

डी0डी0/चेक/स्थानान्तरण संख्या : दिनांक :

दिनांक :	हस्ताक्षर (या पूरा नाम लिखें)
----------	----------------------------------

ऑनलाइन हस्तांतरण विवरण :- साहित्य यात्रा, पंजाब नेशनल बैंक,
एस.के. पुरी शाखा, पटना-1

खाता क्रमांक- 6236000100016263, IFSC- PUNB0623600

वेबसाइट - www.sahityayatra.com



यहाँ से काटिए



साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

वर्ष-8

संयुक्तांक

अंक-32-33

अक्टूबर-मार्च, 2023

परामर्शी

डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित

डॉ. प्रेम जनमेजय

डॉ. हरीश नवल

डॉ. संजीव मिश्र

सम्पादकीय सलाहकार

श्री आशीष कंधवे

समीक्षक मंडल

प्रो. शैलेन्द्र कुमार सिंह

(पूर्व विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
कॉलेज ऑफ कॉमर्स)

प्रो. प्रतिभा सहाय

(पूर्व आचार्य, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग)

डॉ. सुजीत दूबे

(अध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर,
मनोविज्ञान विभाग, ए.एन. कॉलेज, पटना)

उप-संपादक

डॉ. सत्यप्रिय पाण्डेय

डॉ. करुणा पीटर 'कमल'

सहायक संपादक

डॉ. रवीन्द्र पाठक

अमित कुमार मिश्र

साज-सज्जा

निशिकान्त / मनोज कुमार

संपादक

प्रो० कलानाथ मिश्र

साहित्य यात्रा में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं जिनसे संपादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पत्रिका से जुड़े किसी भी व्यक्ति का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का निपटारा पटना क्षेत्र के अन्तर्गत सीमित है। पत्रिका में संपादन से जुड़े सभी पद गैर-व्यावसायिक एवं अवैतनिक हैं।

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

RNI No. : BIHHINO5272

ISSN 2349-1906

विश्व विद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा पूर्व अनुमोदित

विद्वत् परिषद द्वारा समीक्षित

© स्वत्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के पुनः उपयोग के लिए लेखक,
अनुवादक अथवा साहित्य यात्रा की स्वीकृति अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय

‘अभ्युदय’

ई-112, श्रीकृष्णपुरी

पटना-800001 (बिहार)

मोबाइल : 8434880332/09304302308/09835063713

ई-मेल : sahityayatra@gmail.com
kalanath@gmail.com

वेब साईट : <http://www.sahityayatra.com>

मूल्य : ₹ 100/- (एक सौ रुपये मात्र)

प्राप्ति स्थान :

पटना-

आलोक कुमार सिंह, मैगजीन हाउस, शालीमार स्टूडियो के पास,
सहदेव महतो मार्ग, बोरिंग रोड, पटना-800001

दिल्ली -

1. आर.के. मैगजीन सेन्टर, क्रिश्चियन कॉलोनी, पटेल चेस्ट,
दिल्ली, वि.वि., दिल्ली-11007
2. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, मंडी हाउस, नई दिल्ली

शुल्क ‘साहित्य यात्रा’ के नाम पर भेजें।

‘साहित्य यात्रा’ त्रैमासिक डॉ. कलानाथ मिश्र के स्वामित्व में और उनके द्वारा ‘अभ्युदय’
ई-112, श्रीकृष्णपुरी, पटना-800001, बिहार से प्रकाशित तथा ज्ञान गंगा क्रियेशन्स,
पटना से मुद्रित। स्वामी/संपादक/प्रकाशक/मुद्रक : प्रो. कलानाथ मिश्र।

अनुक्रम

संपादकीय	07
पत्र	15
पत्र	16
आलेख	
प्रेमचंद : विमर्शों के जनक	17
कमल किशोर गोयनका	
प्रताप सहगल की लम्बी कविताएँ : कुछ बड़ा रच सकने की क्षमता	24
डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ	
साक्षात्कार	
अभिविश्रुत कथा लेखिका ममता कालिया के साथ प्रो. कलानाथ मिश्र की अंतरंग बातचीत	33
गज़लें	
ख्यातिलब्ध साहित्यकार रामदरश मिश्र जी गजलें	60
रामदरश मिश्र	
आलेख	
बीन लेना चाहिए उम्मीदों को	66
नासिरा शर्मा	
प्रेमचंद और शिवपूजन सहाय : कथा-भाषा का प्रश्न	73
डॉ. मंगलमूर्ति	
संस्मरण	
प्रकाश मनु : मेरे हमसफ़र	81
डॉ. सुनीता	
आलेख	
पृथ्वीराज रासो : प्रामाणिकता एवं काव्य सौष्ठव	93
प्रो. (डॉ.) गणेश प्रसाद	
मैनेजर पाण्डेय : साहित्य में मनुष्यता के अन्वेषक	103
संजय सिंह	
जमींदारी प्रथा एवं मानवीय मनोभावों को चित्रित विश्लेषित करता उपन्यास "प्रेमाश्रम"	113
राजेन्द्र सिंह गहलौत	

हिंदी साहित्य में महिला (स्त्री) आत्मकथा लेखन डॉ. अहिल्या मिश्रा	119
महावीर प्रसाद द्विवेदी का कवि-कर्म गणेश चंद्र राही	132
लोक-मंगल और रीति नीति की गायक हैं, गिरिधर की कुंडलियाँ पद्मा मिश्रा	151
कहानी मैं आ रहा हूँ नयनतारा सुधा गोयल	155
आलेख दिनकर के स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्रीय काव्य की पृष्ठभूमि डॉ. चुम्पन प्रसाद उर्फ आदित्य अभिनव	165
समीक्षा सुरभित स्मृतियों से गुजरना हरिशंकर राठी	170
आलेख नरेन्द्र कोहली के राम डॉ. करुणा पीटर	175
जयप्रकाश कर्दम कृत्य 'छप्पर' उपन्यास में दलित चेतना विकास सूर्यकांत वाघमारे	183
साकेत के नवम सर्ग में गीति-तत्त्व डॉ. पंडित विनय कुमार	188
'लघुकथा और डॉ. पुष्पकरण' प्रियंका कुमारी	193
रिपोर्ट 'भारतीय स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी साहित्य की भूमिका' डॉ. विद्याभूषण	198
दोहे दोहे अशोक कुमार 'निरद'	204

सम्पादकीय

महादेवी वर्मा को पढ़ते हुए यह वाक्य कहीं—न—कहीं मानसपटल पर अंकित हो गया था— जीवन को सब ओर से स्पर्श करनेवाली दिशा सामंजस्यवादिनी होती है, किन्तु फिर मन में यह प्रश्न उठता है कि सामंजस्य किस मूल्य पर। जब कोई मनुष्य अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है, तो बाधाओं का आना स्वाभाविक है। उन बाधाओं को पार करने के लिए जीवन में निरंतर संघर्ष करना होता है, कठिनाइयों को आगे धकेलना ही पड़ता है।

जीवन में सामंजस्य के लिए क्या हम सिद्धांतों से समझौता कर सकते हैं? हम अपने दायित्वों का निर्वहन कर पाते हैं और इन्हीं संघर्षों से जन्म लेता है प्रतिरोध। साहित्य के क्षेत्र में यही प्रतिरोध चेतना साहित्य की शक्ति बन जाती है, जो समाज को एक नई दिशा देती है, समाज के परिवर्तन का कारण बनती है। हिन्दी साहित्य के अनेक मूर्धन्य रचनाकार अपनी प्रतिरोध चेतना के बल पर जहाँ समाज को एक दिशा प्रदान की है वहीं समाज में नवजागरण, नवचेतना का संचार किया। कबीर की तरह लुकाठी हाथ में लेकर अलख जगाता रहा, ऐसे ही रचनाकारों में हम मैनेजर पांडेय जी को पाते हैं, जिन्होंने आलोचना के क्षेत्र में अपना एक अलग स्थान बनाया। चाहे वह व्यावहारिक आलोचना हो अथवा सैद्धांतिक आलोचना हो। वे अपने आलोचना कर्म के प्रति सजग दिखते थे। वहाँ उन्हें उस बात की परवाह नहीं रहती थी कि उस आलोचना कर्म में विचार से सहमति है अथवा असहमति। उनका मानना था कि यदि आलोचना का उद्देश्य पाठ की व्याख्या है तो उस व्याख्या के भी अपने सिद्धांत हैं, जिसके बल पर उस पाठ में व्यक्त अर्थ और सत्य की खोज कर सके।

साहित्यकार को अपने युग का संदेशवाहक बनना पड़ता है। साहित्यकार अपनी कृति में व्याप्त रहता है कि उसे अपनी रचना से सर्वथा पृथक्कर देखना उचित नहीं लगता। गंभीरता और विचारों की तीक्ष्णता उनके आलोचना की विशिष्टता रही। पांडेय जी का यूँ चला जाना हिन्दी साहित्य के लिए एक महाशून्य की स्थिति उत्पन्न कर गया। गोपालगंज बिहार से चलकर साहित्य के श्रेष्ठ शिखर तक का सफर पांडेय जी ने अपने बेबाकीपन और स्रष्टा के दायित्व का निर्वहन